भारतीय नौसेना की लंबी दूरी समुद्री टोही के 50 वर्ष

समाचार: 18 नवंबर 2026 | प्रकाशन: 19 नवंबर 2026
परीक्षा: प्रिलिम्स, रक्षा प्रौद्योगिकी और नौसैनिक संस्थान; GS-III, समुद्री सुरक्षा



Photo: Defence Ministry / PIB

खबरों में क्यों

भारतीय नौसेना ने 18 नवंबर 2026 को लंबी दूरी समुद्री टोही, Long-Range Maritime Reconnaissance (LRMR), के 50 वर्ष पूरे होने का उल्लेख किया। यह भारतीय नौसेना वायु स्क्वाड्रन INAS 312, 'अल्बाट्रॉस', की स्वर्ण जयंती भी है। रक्षा मंत्रालय की PIB विज्ञप्ति इस अवसर को समुद्र के ऊपर लगातार निगरानी की क्षमता के विकास से जोड़ती है।

LRMR क्या है

समुद्र में सुरक्षा केवल युद्धपोत भेजने का प्रश्न नहीं है। बड़े क्षेत्र में जहाजों की गतिविधि पहचानना, संदिग्ध गतिविधि की सूचना देना और समुद्री घटनाओं की साझा तस्वीर तैयार करना भी आवश्यक है। तट-आधारित लंबी दूरी के विमान इस काम में जहाजों और हेलिकॉप्टरों के साथ काम करते हैं। आधुनिक LRMR क्षमता में खुफिया जानकारी, निगरानी और टोही, पनडुब्बी-रोधी युद्ध तथा समुद्री प्रहार की भूमिकाएँ शामिल हैं।

विमान और संस्थान: क्रम याद रखें

- **18 नवंबर 1976:** INAS 312 को INS हंसा, गोवा, में कमीशन किया गया। प्रारंभिक बेड़े में भारतीय वायुसेना से मिले पाँच Lockheed Super Constellation विमान थे।
- **1977:** Ilyushin Il-38 के आने से समुद्री टोही और पनडुब्बी-रोधी क्षमता मजबूत हुई।
- **1988:** Tu-142M को INAS 312 में शामिल किया गया; इससे भारतीय महासागर क्षेत्र में गश्त की पहुँच बढ़ी।
- **2013:** INS राजाली, अरक्कोनम, में P-8I के शामिल होने से व्यापक क्षेत्र की निगरानी और पनडुब्बी-रोधी क्षमताओं का अगला चरण आया।

18 नवंबर की विज्ञप्ति के अनुसार P-8I विमान INAS 312, INS राजाली, और INAS 316, INS हंसा, से कार्य कर रहे हैं। स्क्वाड्रन और उसके वर्तमान बेस को उसकी मूल कमीशनिंग के स्थान से न मिलाएँ।

सुरक्षा के साथ सहायता की भूमिका

PIB के अनुसार LRMR विमानों ने ऑपरेशन कैक्टस, विजय, पराक्रम और सिंदूर में सहयोग दिया है। समुद्री डकैती-रोधी अभियान, खोज और बचाव भी उनकी भूमिका का हिस्सा हैं। इसलिए परीक्षा में इन विमानों को केवल प्रहार करने वाले हथियार के रूप में देखना अधूरा होगा। निगरानी से मिली सूचना समुद्र में अन्य संसाधनों के उपयोग का निर्णय बेहतर बना सकती है।

परीक्षा में सावधानी

INAS एक वायु स्क्वाड्रन है; INS हंसा और INS राजाली नौसैनिक वायु स्टेशन हैं। P-8I का 2013 में शामिल होना LRMR की शुरुआत नहीं है। स्वर्ण जयंती का आधार 1976 में INAS 312 की कमीशनिंग है।

प्रिलिम्स अभ्यास

प्रश्न 1

निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

कथन 1: INAS 312 को 1976 में INS हंसा में कमीशन किया गया था।

कथन 2: इसके प्रारंभिक Super Constellation विमान भारतीय वायुसेना से प्राप्त हुए थे।

कथन 3: भारतीय नौसेना की LRMR क्षमता की शुरुआत 2013 में P-8I के आने से हुई।

उपर्युक्त में से कौन-से कथन सही हैं?

(a) केवल 1 और 2

(b) केवल 2 और 3

(c) केवल 1 और 3

(d) 1, 2 और 3

▼ **उत्तर और व्याख्या**

सही उत्तर: (a)

कथन 1 और 2 सही हैं। 2013 आधुनिक विमान के आने का चरण था; LRMR की स्वर्ण जयंती 1976 से गिनी गई है। स्रोत: रक्षा मंत्रालय/PIB, 18 नवंबर 2026।

PCSMANTRA.COM

प्रश्न 2

18 नवंबर 2026 की रक्षा मंत्रालय विज्ञप्ति के अनुसार कौन-सा युग्म सही सुमेलित है?

(a) INAS 312 का वर्तमान P-8I संचालन: INS राजाली, अरक्कोनम
(b) INAS 316 का वर्तमान P-8I संचालन: अंडमान का INS उत्क्रोश
(c) INAS 312 की मूल कमीशनिंग: INS राजाली, 2013
(d) Tu-142M का INAS 312 में समावेश: 1976

▼ उत्तर और व्याख्या

सही उत्तर: (a)

विज्ञप्ति INAS 312 को INS राजाली और INAS 316 को INS हंसा से जोड़ती है। INAS 312 की मूल कमीशनिंग 1976 में हंसा में हुई; Tu-142M 1988 में आया।

स्रोत

रक्षा मंत्रालय/PIB, 18 नवंबर 2026: https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2337736

अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्न

LRMR की स्वर्ण जयंती का आधार कौन-सा वर्ष है?

आधार 1976 है। INAS 312 को 18 नवंबर 1976 को INS हंसा, गोवा, में कमीशन किया गया था।

क्या INAS 312 और INS राजाली एक ही प्रकार की संस्था हैं?

नहीं। INAS 312 एक नौसैनिक वायु स्क्वाड्रन है; INS राजाली एक नौसैनिक वायु स्टेशन है।

PCSMANTRA.COM